AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF: 1.048(I2OR), 3.125 (IIFS) & 3.8(SJIF)
Vol (3), Issue (3), July-September 2026 ISSN: 3048-7951

डॉ० अतुल कृष्ण साहित्य में कबीर बोध- एक विश्लेषण

अशोक कुमार त्यागी[1] ; डॉ. सीमा शर्मा [2]

DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.23928915
Review: 25/09/2026 Acceptance: 29/09/2026 Publication:28/10/2026

सार संक्षेपण:

हिंदी साहित्य में चिंतन के नवीन क्षितिजों का सृजन उनके विकासवादी तथा प्रगतिशील प्रवृति का एक स्वाभाविक अंग है। यदि हम सामाजिक भूमिका पर व्यक्त मानवतावादी प्रवृति का अनुशीलन करते हैं तो कबीर को अपने सबसे निकट पाते हैं। ऐसा नहीं है कि भक्ति काल से लेकर वर्तमान पर सामाजिक धरातल पर चिंतन-मनन नहीं हुआ, यह प्रक्रिया अनवरत चल रही है, लेकिन कबीर के पश्चात ऐसा लगता है कि हिंदी साहित्यकार सामाजिक विकारों की धूल को झाड़ना तो चाहते थे, लेकिन कबीर की भांति समाज में आमूल परिवर्तन का साहस वे नहीं कर पाए। इस दृष्टि से डॉ. अतुल कृष्ण का पृथक साहित्यिक व्यक्तित्व है। वे पूर्ण के कलमकार भी नहीं है, लेकिन वे प्रत्येक परम्परा के प्रति सहमति तथा स्वीकृति भाव भी नहीं रखते। वे अपनी संस्कृति तथा आध्यात्मिक विशिष्टता के स्वस्थ तथा सम्पन्न अंशो से प्रेरणा भी ग्रहण करते हैं और उन तत्वों को सामाजिक व्यवहार से पृथक करने का वैचारिक अभियान भी चलाते हैं, जिसने भारतीय समाज को आभाहीन, निर्बल तथा शताब्दियों तक दास्यत्व के भाव में जीने के लिए विवश किया। वे साहस के साथ रूढ़ियों पर प्रहार करते हैं, और एक ऐसी चित्र का निर्माण भी करते चलते हैं जिससे भारतीय सामाजिक व्यवस्था में समत्व भाव जाग्रत हो, त्याग भावना को सम्मान मिले और भारतीयता को गौरवांवित किया जा सकें।

शब्द कुंजी :- सांस्कृतिक अस्मिता, सामाजिक परिमार्जन, सार्वभौमिक सत्ता, रचनाधर्मिता, प्रक्षिप्त, विश्व बोध, संरचना, आत्म-साक्षात्कार|

प्रस्तावना: डॉ. अतुल कृष्ण के साहित्य की यथार्थवादी दृष्टि, निर्भीक ओजस्वी स्वर, समत्व भाव, अभेदात्मक जीवन दर्शन, सामाजिक विकार के प्रति विद्रोहात्मकता तथा जीवन में मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा, उनको कबीर-भाव के निकट लाकर खड़ा कर देती है। साहित्यिक दृष्टि से कबीर केवल मध्यकाल के निर्गुण विचारधारा के विद्रोही कवि ही नहीं हैं, वे परिमार्जन का एक जीवंत स्वर है। वे पांच शताब्दी पूर्व सामाजिक क्रांति का आह्वान करते हैं और एक ऐसे जीवन दर्शन के नायक बन जाते हैं जो लोक और परम्पराओं के मध्य के संघर्श को तार्किकता तथा मानव मूल्यों के प्रति परम आस्था के आयुध से लड़ने के लिए लोक-जीवन में प्रवेष कर जाते हैं।

[1]शोधार्थी, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, इंडिया|
[2]शोध-निर्देशक, प्रोफेसर हिंदी एवं विभागाध्यक्ष भाषा, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, इंडिया

जब मध्यकाल में विदेशी आक्रांताओं के कारण सांस्कृतिक अस्मिता का प्रश्न उठ खड़ा होता हैं तब उसकी की खोज में कबीर वेदांत के महान सूत्रों तथा अद्वैत दर्शन के मानवतावादी चिंतन का सहारा लेकर एक नए विचार का आविर्भाव करते हैं जिसमें केवल निश्ठा है, समर्पण है और सभी के प्रति प्रेम के भाव हैं। उसी भाव को डॉ. अतुल कृश्ण बीसवीं षताब्दी के अंतिम दषक में अपने उपन्यास पलायन के माध्यम से प्रकट करते हैं।

पलायन उपन्यास जातिवाद तथा अभिकुलीन तंत्र की मानसिकता पर प्रहार है। वे अपने सम्मान में प्रकाषित अभिनन्दन ग्रंथ षिखर में लिखते हैं कि यदि किसी षास्त्र या पुराण में कुछ भेद-भाव या ऊँच-नीच की बातें लिखी हैं तो प्रमाण नहीं है कि मूल रूप में लिखी गई या कालांतर में प्रक्षिप्त हो गई। यदि आज वे लिखी हुई भी हैं तो उन्हें मानकर अंधानुकरण करना, धर्मानुसार नहीं होगा। अपनी बुद्धि, विवेक तथा वेदों को आधार मानकर अनुचित मंत्रों, ष्लोकों, कथनों को धर्मषास्त्रों सं निकाल दें और उनका षुद्धिकरण करें। डॉ. अतुल कृष्ण का यह कथन साहसिक होने के साथ-साथ सामाजिक संरचना को दोशमुक्त करने का एक सषक्त वैचारिक अभियान भी है।

कबीर भी परम्पराओं तथा षास्त्रों में चली आ रही, विघटनकारी प्रवृतियों का विरोध करते थे, वे सामाजिक परिमार्जक की भूमिका में जातिवाद को ईष्वरीय रचना का अपमान मानते थे। उनका कहना था कि किसी ज्ञानी या सज्जन व्यक्ति से उसकी जाति नहीं, अपितु उसका ज्ञान पूछना चाहिए। जैसे तलवार की कीमत उसकी धार से होती है, म्यान (कवर) से नहीं।

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

डॉ. अतुल कृष्ण वेदांत के इस सूत्र को स्वीकार करते हैं कि आत्म-तत्व ही ब्रह्य है। अतः प्राणिमात्र में कोई भी निम्न या उच्च नहीं हो सकता। प्रत्येक जीव का नियामक एक ही सत्ता है। वे प्रभात में प्रकाषित अपने आलेख में लिखते हैं कि भारतीय दर्शन में व्यक्ति की निज अस्मिता, जिसे आत्मा के रूप में स्वीकार किया जाता है, वह सार्वभौमिक सत्ता का ही अंश है। उसमें वहीं ऊर्जा समाहित है, जो जगत संचालन में सहायक है। आत्म-तत्व अपने भीतर यही गुण तथा लक्षण समाहित किए हुए है जो परमसत्ता में हैं जो इस सृश्टि के नियामक है। अंतर मात्र यह है कि वह ऊर्जा अति अल्प मात्रा में है।

जब सभी जीव एक ही तत्व से निर्मित है, तो फिर जातीय भेद क्यो? क्यों अभिकुलीनता का अहंकार है। इसी भाव को कबीर ने भी इस प्रकार से कहा है कि जब परमपिता परेष्वर ने सभी को समान भाव से उत्पन्न किया है, उसकी दृष्टि में किसी प्रकार कास कोई भेद नहीं है तो संसार में जाति आधारित विभाजन क्यों है? अपने इस प्रश्न को वे काव्यात्मक स्वरूप देते हुए कहते हैं कि ईश्वर की दृष्टि में सब समान, एक बूँद, एकै मल मुतर, एक चाम, एक गुदा। एक जोती से सब उतपना, कौन बामन कौन शूद।। अर्थात् जब ईश्वर ने सबको एक

ही मिट्टी और एक ही तरह के शरीर से पैदा किया है, तो फिर कौन ब्राह्मण और कौन शूद्र? जन्म के आधार पर भेदभाव आधारहीन है।

डॉ. अतुल कृष्ण भी कबीर भांति एक आस्थावादी विचारक है। गुरु और ईश्वर में उन्हें अखण्ड विश्वास था, उनका विद्रोह आस्तिक विद्रोह था। उन्होंने समाज व्यवस्था को उस बिंदु पर चुनौती दी थी जहाँ उन्होंने उसे ईश्वर इच्छा के विपरीत अनुभव किया था। उनकी दृष्टि में ईश्वर ने मानव मात्रा को उत्पन्न किया हैं।

अतः उसके लिए सब समान हैं। वे ब्राह्मण तथा शूद्र में कोई भेद स्वीकार नहीं करते। वे कहते हैं जब सभी को एक ही ईश्वर ने बनाया है, एक ही हांड मॉस हैं तो कौन ब्राह्मण तो कौन शूद्र ? कबीर की यह मान्यताएं तत्कालीन समाज व्यवथा के प्रति विद्रोहात्मक प्रतीत होती हैं और समाज को समत्व की दिशा दिखाती है। कबीर ईश्वर के प्रति परम आस्थावादी है, उसी प्रकार बौद्ध मत के प्रति आकर्षण होने के प्रश्चात भी वे अदृश्य सत्ता पर पूर्ण विश्वास रखते हैं।

वे समाज के उस बिंदु पर प्रहार करते है जो ईश्वर की इच्छा के विपरीत समाज में भेदक रेखा की संरचना करते है। उनकी दृष्टि में ईश्वर ने मानव मात्र को उत्पन्न किया हैं, अतः सभी आदर पाने योग्य है और सभी के साथ समान व्यवहार होना चाहिए। इसी विचार को कबीर ने भी प्रकट किया है। वे कहते हैं कि ब्राह्मण तथा सुद्र में कोई भेद नहीं है। प्रत्येक रचना ईश्वर का स्वरूप है। एक ही प्रकार के पंचतत्व से जीव का तन बना है, अतः कोई शुद्ध या दूसरा अशुद्ध नहीं हो सकता। कबीर जातिवादी व्यवस्था को चुनौती देते हुए लिखते हैं कि-

जातपात सब झूठ है-, जाति भरम पड़ी मत कोई।
जाति नहीं जगदीश की, औरन की क्या होई।

अर्थात् जाति-पांति सब पाखंड है, इसमें भ्रमित न हों। जब ईश्वर ने जाति नहीं बनाई, तो इंसानों ने क्यों बनाई? डॉ. अतुल कृष्ण सामाजिक समस्याओं को अपनी रचनाधर्मिता का केवल प्रतिपाद्य नहीं बनाते, अपितु वे कबीर की भांति स्पष्ट रूप से उसका स्थायी और दूरगामी हल खोजने का प्रयास भी करते हैं। यहां उनकी स्पष्टवादिता मानवीय मूल्यबोध और गहरी संवेदनाओं को प्रकट करती है। विकारों के विरोध में वे समाज को खुली चुनौती देने में संकोच नहीं करते। वे समाज के बाहरी परिदृश्य पर ही नहीं अपितु सामाजिक-अन्तर्दशाओं,विचलित मनोवृतियों पर भी गहरा प्रहार करते हैं।

यदि हम डॉ. अतुल कृष्ण और कबीर के सारस्वत कर्म की सम्यक विवेचना करते हैं तो दोनों भारतीय ज्ञान परम्परा को सबल करते प्रतीत होते हैं। कबीर की वाणी में नैतिकता, तार्किकता और लोक मंगल के प्रति समर्पण के भाव मिलते हैं। यही भाव हम डॉ. अतुल कृष्ण के साहित्य में देखते हैं। वरिष्ठ शिक्षाविद् डॉ. मान सिंह वर्मा उनके चरित्र का मूल्यांकन करते हुए कहते हैं कि उनके मन में समाज के उपेक्षित जन के प्रति एक

वेदना है, सामाजिक न्याय के लिए एक छपपटाहट है और उसे व्यक्त करने की प्रबल ललक जो उन्हें एक अच्छा साहित्यकार सिद्ध करती है।

मूल बात यह है कि उनकी रचनात्मक प्रवृति है, क्षण-क्षण कुछ नया सोचने और रचने की क्षमता है, जो साहित्य से लेकर उनके अन्य सभी कार्यों में परिलक्षित होती है। उनका साहित्यकार होना, इस बात का द्योतक है कि वे अच्छे मनुष्य हैं। अच्छे मनुष्य होने का अभिप्राय यही है कि उनके जीवन के दोनों अंग वैचारिक तथा व्यावहारिक नैतिक आदर्शों से अनुप्रेरित हैं। इस कारण ही वे समाज की विसंगतियों से टकराने का साहस करते हैं। यही साहस कबीर ने भी दिखाया था।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कबीर को समाज सुधारक तथा परिवर्तनकारी योद्धा माना है। कबीर की लड़ाई भी सामाजिक व्यवस्था में अन्याय के प्रति थी। संत कबीर का साध्य मानव कल्याण ही है, इस कारण उन्होंने अपने काव्य को इसका सशक्त साधन बनाया। यही डॉ. अतुल कृष्ण ने किया है। उनका पहला उपन्यास ही उनकी विचारधारा और सामाजिक क्रांति का घोषणा पत्र है। वह रुढ़िवादी समाज के लिए चुभन अवश्य पैदा कर सकता है, लेकिन समाज के परिमार्जन की पूर्ण शक्ति उसमें है। इसी भांति कबीर की वाणी, वचन, संदेश सदैव कड़वे और कटु होते हैं, लेकिन इनकी बातों में शत-प्रतिशत नैतिकता तथा तार्किकता है।

वैसे नागार्जुन, निराला आदि की मुद्रा कहीं-कहीं कबीर से अवश्य मिलती है लेकिन वे समाज सीधा प्रहार करने में संकोच करते हैं। यह अवश्य कह सकते है कि भक्तिकालीन दादू, पीपा, द नानक आदि कबीर के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक है। लेकिन उन्होंने नैतिकता पर बल दिया और परस्पर प्रेम को स्थापित करने का प्रयास किया। लेकिन डॉ. अतुल कृष्ण समस्या का निदान किए बिना किसी भी समस्या को हल करने के पक्ष में नहीं हैं। वे प्रेम, सौहार्द और सामाजिक जीवन में वैज्ञानिक तथा मानवीय सोच की बात अवश्य करते हैं लेकिन धरातल पर जो विशाक्त परिवेष है, उनके लिए वे एक चिकित्सक की भूमिका में पहले रोग के कारणों को देखते हैं और फिर उसके अनुसार चिकित्सा करते हैं, यही भाव उनके सम्पूर्ण साहित्य में परिलक्षित होता है।

डॉ. अतुल कृष्ण ने मानव कल्याण की भावना से प्रेरित होकर, धार्मिक पाखंड तथा सामाजिक दोशों को पहचान कर, आचरण की पवित्रता, कर्तव्य की परायणता, सौहार्द की भावना और सेवा द्वारा एकता की भावना को पुष्ट किया है। कबीर की भांति डॉ. अतुल कृष्ण भी आत्म-साक्षात्कार तथा आत्मावलोकन पर बल देते हैं। वे मानते है कि व्यक्ति को स्वयं से भी संवाद करना चाहिए। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति अपने भीतर के दोशों को समझ कर दूर कर सकता है। कबीर भी आत्म-साक्षात्कार तथा भीतर की यात्रा के पक्षधर हैं। वे कहते हैं कि जब व्यक्ति अपने भीतर की यात्रा करता है तो वह अंतर्जगत में अनेक प्रकार की ग्रंथियों को पाता है। उसको अनुभव होता है कि दोश केवल दूसरों में नहीं उसके भीतर भी हैं। इसलिए कबीर कहते हैं कि-

अर्थात् जाति-पांति सब पाखंड है, इसमें भ्रमित न हों। जब ईश्वर ने जाति नहीं बनाई, तो इंसानों ने क्यों बनाई? डॉ. अतुल कृष्ण सामाजिक समस्याओं को अपनी रचनाधर्मिता का केवल प्रतिपाद्य नहीं बनाते, अपितु वे कबीर की भांति स्पष्ट रूप से उसका स्थायी और दूरगामी हल खोजने का प्रयास भी करते हैं। यहां उनकी स्पष्टवादिता मानवीय मूल्यबोध और गहरी संवेदनाओं को प्रकट करती है। विकारों के विरोध में वे समाज को खुली चुनौती देने में संकोच नहीं करते। वे समाज के बाहरी परिदृश्य पर ही नहीं अपितु सामाजिक-अन्तर्दशाओं,विचलित मनोवृतियों पर भी गहरा प्रहार करते हैं।

यदि हम डॉ. अतुल कृष्ण और कबीर के सारस्वत कर्म की सम्यक विवेचना करते हैं तो दोनों भारतीय ज्ञान परम्परा को सबल करते प्रतीत होते हैं। कबीर की वाणी में नैतिकता, तार्किकता और लोक मंगल के प्रति समर्पण के भाव मिलते हैं। यही भाव हम डॉ. अतुल कृष्ण के साहित्य में देखते हैं। वरिष्ठ शिक्षाविद् डॉ. मान सिंह वर्मा उनके चरित्र का मूल्यांकन करते हुए कहते हैं कि उनके मन में समाज के उपेक्षित जन के प्रति एक वेदना है, सामाजिक न्याय के लिए एक छपपटाहट है और उसे व्यक्त करने की प्रबल ललक जो उन्हें एक अच्छा साहित्यकार सिद्ध करती है।

मूल बात यह है कि उनकी रचनात्मक प्रवृति है, क्षण-क्षण कुछ नया सोचने और रचने की क्षमता है, जो साहित्य से लेकर उनके अन्य सभी कार्यों में परिलक्षित होती है। उनका साहित्यकार होना, इस बात का द्योतक है कि वे अच्छे मनुष्य हैं। अच्छे मनुष्य होने का अभिप्राय यही है कि उनके जीवन के दोनों अंग वैचारिक तथा व्यावहारिक नैतिक आदर्शों से अनुप्रेरित हैं। इस कारण ही वे समाज की विसंगतियों से टकराने का साहस करते हैं। यही साहस कबीर ने भी दिखाया था।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कबीर को समाज सुधारक तथा परिवर्तनकारी योद्धा माना है। कबीर की लड़ाई भी सामाजिक व्यवस्था में अन्याय के प्रति थी। संत कबीर का साध्य मानव कल्याण ही है, इस कारण उन्होंने अपने काव्य को इसका सशक्त साधन बनाया। यही डॉ. अतुल कृष्ण ने किया है। उनका पहला उपन्यास ही उनकी विचारधारा और सामाजिक क्रांति का घोषणा पत्र है। वह रुढ़िवादी समाज के लिए चुभन अवश्य पैदा कर सकता है, लेकिन समाज के परिमार्जन की पूर्ण शक्ति उसमें है। इसी भांति कबीर की वाणी, वचन, संदेश सदैव कड़वे और कटु होते हैं, लेकिन इनकी बातों में शत-प्रतिशत नैतिकता तथा तार्किकता है।

वैसे नागार्जुन, निराला आदि की मुद्रा कहीं-कहीं कबीर से अवश्य मिलती है लेकिन वे समाज सीधा प्रहार करने में संकोच करते हैं। यह अवश्य कह सकते है कि भक्तिकालीन दादू, पीपा, द नानक आदि कबीर के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक है। लेकिन उन्होंने नैतिकता पर बल दिया और परस्पर प्रेम को स्थापित करने का प्रयास किया। लेकिन डॉ. अतुल कृष्ण समस्या का निदान किए बिना किसी भी समस्या को हल करने के पक्ष में नहीं हैं। वे प्रेम, सौहार्द और सामाजिक जीवन में वैज्ञानिक तथा मानवीय सोच की बात अवश्य करते हैं लेकिन धरातल

पर जो विशाक्त परिवेष है, उनके लिए वे एक चिकित्सक की भूमिका में पहले रोग के कारणों को देखते हैं और फिर उसके अनुसार चिकित्सा करते हैं, यही भाव उनके सम्पूर्ण साहित्य में परिलक्षित होता है।

डॉ. अतुल कृष्ण ने मानव कल्याण की भावना से प्रेरित होकर, धार्मिक पाखंड तथा सामाजिक दोशों को पहचान कर, आचरण की पवित्रता, कर्तव्य की परायणता, सौहार्द की भावना और सेवा द्वारा एकता की भावना को पुष्ट किया है। कबीर की भांति डॉ. अतुल कृष्ण भी आत्म-साक्षात्कार तथा आत्मावलोकन पर बल देते हैं। वे मानते है कि व्यक्ति को स्वयं से भी संवाद करना चाहिए। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति अपने भीतर के दोशों को समझ कर दूर कर सकता है। कबीर भी आत्म-साक्षात्कार तथा भीतर की यात्रा के पक्षधर हैं। वे कहते हैं कि जब व्यक्ति अपने भीतर की यात्रा करता है तो वह अंतर्जगत में अनेक प्रकार की ग्रंथियों को पाता है। उसको अनुभव होता है कि दोश केवल दूसरों में नहीं उसके भीतर भी हैं। इसलिए कबीर कहते हैं कि-

तुर्की धर्म बहुत हमें खोजा,
बहुत जागर करैया, बोधा।
गफिला गरब करै अधिकारै,
स्वारथ आरती बधाई एक गई।

कबीर के श्रीराम दशरथ पुत्र नहीं हैं। वह अनन्त सत्ता है जो निराकार है। वे मानते हैं कि राम केवल संज्ञा नहीं है, यह एक आस्था है जो इस रहस्य को समझ लेता है, उसको मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। वे लिखते हैं कि-

दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।
राम नाम का मरम है आना।।

डॉअतुल कृष्ण इस कथन को दार्शनिक रूप में अभिव्यक्त करते हैं। वे लिखते हैं कि तैत्तिरीय उपनिषद . में ऋशि लौकिक तथा परालौकिक शक्ति के भेद को समाप्त करते हुएकहते हैं कि सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्यम्। इस सूत्र के माध्यम से, वे बताना चाहते हैं कि वह शक्ति जो अनन्त है, जिसका कोई अंत नहीं और सीमारहित है, वह आपके भीतर ही है। वे भी कबीर की भांति अनन्त सत्ता को सर्वव्यापी मानते हैं जो व्यक्ति के भीतर चेतना के रूप में उपस्थित है।

कबीर कर्मवाद के पक्षधर हैं। वे नैतिकतापूर्ण तथा मानव मूल्यों पर आधारित कर्म को ईश्वर की भक्ति की श्रेणी में रखते है। व्यक्ति का जीवन यात्री का जीवन है। एक दिन उसको अपने परम गंतव्य की ओर जाना निश्चित है। वे कहते हैं कि जिस प्रकार जल का बुलबुला अल्पकाल में ही नष्ट हो जाता है उसी प्रकार मानव का जीवन क्षणभंगुर है जैसे प्रभात होने के बाद तारे छुप जाते हैं वैसे ही मानव का शरीर को एक दिन नष्ट होकर मिट्टी में विलीन हो जाना है। कबीर कहते है कि-

पानी केरा बुदबुदा असमानस की जात।

एक दिना छुप जाएगा ज्यों तारा परभात।।

डॉ-अतुल कृष्ण भी जीवन की नैश्वरता को स्वीकार करते हैं। इसलिए वे जीवन के प्रत्येक पल को लोक . मंगल तथा नव सृजन के लिए व्यय करता चाहते हैं। इस भाव को उनके कथा संग्रह की कहानी आधारशिला में परिलक्षित किया गया है। कहानी की नायिका शिवानी अपने जीवन को मानवसेवा के लिए अर्पित करना चाहती - है। वह कुश्ठ आश्रम के लिए अपनी जमापूंजी में समर्पित करना चाहती है। जीवन जल के बुदबुदे- की भांति है, लोक सेवा के लिए जितना समय तथा सामर्थ व्यक्ति लगाता है, उतना ही जीवन भी सार्थक होता है।

डॉअतुल कृष्ण यह मानते है कि व्यक् .ति स्वयं में पूर्ण नहीं है, उसको एक अज्ञात सत्ता संचालित करती है। वे अपने अभिनन्दन ग्रंथ के आत्मकथ्य में लिखते हैं कि मेरा विश्वास है कि मनुष्य स्वयं कुछ नहीं करता-, वह जो भी करता है, उससे प्रभु ही करवाते हैं। लेकिन प्रभु ने विवेक शक्ति भी प्रदान की है, इसके आधार पर व्यक्ति कार्यों के गुण-दोश को देख सकता है। यह स्थिति ही ज्ञान का प्रकटीकरण है। जब व्यक्ति आत्म- अनुचित का ज्ञान उत्पन्न होता है। कबीर इस भाव को इस प्रकार -निरीक्षण करता है तो उसके भीतर उचित -प्रकट करते हैं

संतो भाई आई ज्ञान की आंधी रे !

भ्रम की टाटी सबै उड़ानी, माया रहै न बाँधी रे।।

कबीर जिसे ज्ञान की आंधी कहते हैं, डॉचेतना या ज्ञान कहते हैं। सांगरुपक -अतुल कृष्ण उसको आत्म . के माध्यम से कबीर ने ज्ञान आदि का आरोप करते हुए यह निरूपित किया है कि ज्ञान का उदय होने पर माया, मोह, भ्रम आदि नष्ट हो जाते हैं।

अपने एक आलेख में डॉअतुल कृष्ण लिखते हैं कि हम भीतर की यात्रा करते हैं तो उन सभी तटबंधों . लोक में पहुंच जाते हैं-को भार कर उस भाव, जहां अपार आनन्द है, किसी के प्रति दुराग्रह नहीं है, असीमित आशाएं है, और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टि है। जब कबीर अंतर्जगत की यात्रा पर जाते हैं तो तब उनका आत्मचेतना में रूपांतरित हो जाती है। इस -चेतना विश्व-बोध विश्व बोध में परिवर्तित हो जाता है। उनकी आत्म- -स्थिति का वर्णन कबीर इस प्रकार करते हैं

जब मैं था तब हरि नहीं अब हरि हैं मैं नाहिं ।

सब अधियारा मिट गया जब दीपक देखा माहि।।

कबीर कहते हैं कि जब स्वत्व का अहंकार समाप्त हो जाता है, तो व्यक्ति परम सत्ता का अंग बन जाता है। उनके आध्यात्मिक आश्रय में, वे अहं को मिटाते हुये माया,अज्ञान आदि को त्यागने के सन्दर्भ में अपने विचार समाज तक प्रेषित करना चाहते है। कबीर कहते हैं कि अहंकार को त्यागे बिना ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती

जब तक मेरे अंदर अहंकार व्याप्त था तब मुझसे ईश्वर दूर थे और जब मैंने अहंकार का त्याग कर दिया तब मैं ईश्वर को सदैव अपने सन्निकट पाता हूं।

कबीर के कहने का आशय यह है कि अहंकार और भगवत प्रेम दोनों साथसाथ- नहीं रह सकते। इस स्थिति के लिए डॉअतुल कृष्ण प्रकृति के प्रत्येक तत्व से भावनात्मक आधार पर एकाकार होने की बात करते . हैं, इससे अहंकार समाप्त हो जाता है और एकाकार महाकार में परिवर्तित हों जाता है। वे लिखते हैं कि भारतीय चिंतन कहता है कि प्रकृति के सहयोग सें मानव जीवन के उच्चतर स्तर को प्राप्त कर सकता है क्योंकि दोनों के मध्य शाश्वत संबंध हैं। ये संबंध ही ईश्वरीय से एकाकार होने का भी संकेत है।

विसंगत, व्यर्थता और विडम्बना, अंध विश्वास और जातीयता जो कबीर युग का सत्य थे, वे आधुनिक युग के भी बोध बने हुए हैं। निराशा और दुःख भावना, ग्लानि और विरक्ति तथा असंगति जीवन का यथार्थ बना हुआ है। अपने युग में कबीर ने जीवन की इन त्रासदियों पर प्रहार किया था, 21 वीं शताब्दी में वही कार्य डॉ अतुल कृष्ण ने अपनी सारस्वत साधना के माध्यम से किया है। वे अपने आप को कभी कुंठित अनुभव.नहीं करते और न ही निराश होते हैं। उनमे सामाजिक व्यवस्था के प्रति खीझ, विद्रोह और आक्रोश हैं लेकिन वे आषावान है, समस्याओं को अवष्य उठाते हैं लेकिन मानसिक घुटन बनकर समाज में हीनता को स्थापित नहीं करते, वे मार्गप्रस्त करते हैं और एक सार्थक दिशा भी देते हैं।

कबीर और डॉअतुल कृष्ण की साहित्यिक संरचना सामाजिक चिंतन की दशा और दिशा को बदलने की . अतुल कृष्ण भी कायिक तथा षल्य .क्षमताओं से युक्त है। कबीर एक बहुत बड़े सामाजिक चिकित्सक थे तो डॉ साथ कबीर की भांति सामाजिक चिकित्सक भी हैं। कबीर भ्रमण कर-चिकित्सक होने के साथ लोगों को ज्ञान रूपी अमृत वितरित करने का कार्य करते थे, यही कार्य डॉअतुल कृष्ण अपने अनेक सामाजिक संगठनों ., सुभारती सेवा संस्था, उन्मुक्त भारत तथा सनातन संगम न्यास और अपने साहित्य के माध्यम से करते हैं। चाहे कबीर हो या डॉ अतुल कृष्ण दोनों ही सुलझाने वाली .संस्कृति के वाहक हैं, वे उलझाने वालों से दूर रहते हैं। दोनों समतामूलक संस्कृति चाहते है।

चाहे कबीर हों या डॉअतुल कृष्ण इन दोनों ने समाज के आतंरिक एवं बाह्य अस्तर को जोड़ने का कार्य . - किया हैं। इस क्रम में उनका संघर्ष उन तमाम शक्तियों से है जो समाज को अलगअलग वर्गों में बाटने का काम करती हैं या जो शोषण तथा उत्पीडन को बढ़ावा देती हैं। दोनों की सषक्त समाज की परिकल्पना करते हैं, इस कारण दीनअतुल .हीन एवं उपेक्षित मानव समुदाय के प्रति उनमे अपार सहानुभूति है। कबीर की भांति डॉ- कृष्ण का जीवन अत्यंत सादा और सहजहै। वैभव, शक्ति और सत्ता के प्रति उनके मन में किसी प्रकार की विशिष्ट ग्रंथि नहीं है।

कबीर की भांति डॉअतुल कृष्ण के साहित्य में सामाजिक उदात्तमा के परिवेश में मानवतावादी आदर्श . की अभिव्यक्ति हुई है। व्यक्ति की विषाल मनस्विता के चित्र उनके उपन्यास पलायन तथा कथासंग्रह आधारषिला तथा उन्नति के पथ में अनेक पात्रों में मिलते हैं। उनके पात्र अपनी चारित्रिक उदात्तता में महीयसी और गरिमामयी हैं। उनका चिंतन सामूहिक लोककल्याण जो मूलतः मानवतावादी आदर्श से प्रेरित है-, यही कबीर का चिंतन भी है। डॉअतुल कृष्ण सौहार्द ., तार्किकता, मानव मूल्यों का संरक्षण तथा समन्वय की भावना के आधार पर नवीन संस्कृति के विकास का स्वप्न देखते हैं, जिसमें मानव के अंतजर्गत और बहिर्जगत दोनों के उन्नयन हो सकें, यही वह कबीर बोध है जो डॉअतुल कृष्ण के साहित्य तथा जीवन दर्शन का मूल सूत्र है। .

संदर्भ ग्रंथ -

शिखर सम्पादक सरदार अहमद -, संस्करण सन 2007, प्रकाशनअतुल कुष्ण अभिनन्दन समारोह समिति .डॉ-, खतौली

साप्ताहिक प्रभात अंक 03 अप्रैल, 2023

पलायन अतुल कृष्ण संस्करण .डॉ -2006 प्रकाशन- तुलसी पब्लिकेशन मेरठ

साप्ताहिक प्रभात अंक 08 जनवरी, 2023

कबीर ग्रन्थावली श्याम सुन्दर दास संस्करण-1987 भारतभारती प्रकाशन-, इलाहाबाद

कबीर की विचारधारा गोविंद त्रिगुणायत डॉ० -, प्रथम संस्करण, संवत २००९ वि० साहित्य निकेतन, कानपुर,

आधारषिला सन -अतुल कृष्ण संस्करण .डॉ -2010, प्रकाशनसुभारती मीडिया-, मेरठ

साप्ताहिक प्रभात अंक 10 अप्रैल, 2022

संत कबीररामकुमार वर्मा -, साहित्य भवन प्रा०लि० इलाहाबाद से चतुर्थ आवृति १९९७ ई०

साप्ताहिक प्रभात अंक 21 जुलाई, 2024.